सिक्किम विश्वविद्यालय क्रॉनिकल

खंड 2 अंक 3 मई 2014 केवल निजी प्रसार हेतु

गेब्रियल गार्सिया मार्क्वेज को याद करती एक शाम : अंग्रेजी विभाग के छात्रों द्वारा आयोजित एक संक्षिप्त संगोष्ठी

वैद्यनाथ निशांत, एमए, द्वितीय सेमेस्टर, अंग्रेजी विभाग

चिंताग्रस्त मूड में मार्क्वेज के एक चित्र ने सभी को हoल में आमंत्रित किया. 25 अप्रैल 2014 को एक गर्म दिन था और हoल जल्द ही भर गया था. □ाम की □ुरुआत बोनिता राय के स्वागत भा□ण से हुई और मार्क्वे□ के प्रति सम्मान प्रदर्शन के रूप में सभागृह में उपस्थित सभी 2 मिनट समय मौन रहे. तब समारोह की परिवेश में कुछ बदलाव सा लाया. आखिर, यह संगो□ठी मार्क्वेज की मौत का □ोक मनाने के लिए नहीं था, बल्कि यह उनके जीवन और उनके लेखन का जश्न मनाने के लिए किया गया था.

वक्ताओं और अतिथियों का परिचय कराया गया और पा. रंपरिक खडा से उनका स्वागत किया गया. मिंगमा छोड. ेन की आरंभिक भा□ण ने उस □ाम और संगो□ठी का वातावरण बना दिया (हम इस अंक में इसका मूलपाठ को पुनय प्रस्तुत करते हैं) पहले वक्ता प्रो बासुदेव चक्रवर्ती, विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग ने जादूई यथार्थवाद के पहलुओं और मार्क्वेज का एक संक्षिप्त जीवनी पर अपना भा□ण दिया. उन्होंने गेबो के लेखन और दूसरों के बीच तुलना भी की . चेतन श्रे□टा, लेखक और वास्तुकार (जो द किंग्स हार्वेस्ट का लेखक भी है) ने एक विनोदी भा□ण से सभा की मूड को बदल दिया और उन्होने मार्क्वे□ के कृतियों से कुछ अंशों को प□ा. उनके वर्णन ने मार्क्वेज के लेखन को जीवंत बना डाला. उन्होंने मार्क्वेज को प□ने का अपने निजी अनुभवों को भी साझा किया. इसके बाद इतिहास विभाग के डo. वी. कृ□ण अनंत ने अपना भा□ण दिया. उन्होंने द स्टोरी अoफ अ शिपरेक्ड सैलर के संदर्भ में पत्रकार के रूप में मार्क्वे□ के कार्यो पर प्रकाश डाला. और इसी काम ने मार्क्वे□ को घर और देश छोडने के लिए मजबूर किया था और उन्होने एक विदेशी संवाददाता के रूप में यूरोप में एक निर्वासित की तरह अपना जीवन बिताया.

ईएल एस्पेक्टटर में प्रकाशित मार्क्वेज के लेखों की श्रृंखलाओं ने विवाद ख□ा कर दिया और कोलंबिया के □ासन को भी नाराज कर दिया. उन्होने लघु कहानियों में मार्क्वेज के लेखन कौशल के बारे में उल्लेख किया. डo. अनंत ने यह भी कहा कि कैसे मार्क्वे□ सिर्फ केवल साहित्य में ही सीमित नहीं रहे और उस समय की बात है जब हर किसी को मार्क्वे□ को प□ने के लिए तैयार किया गया था. और उनकी कृतियों में लैटिन अमेरिका के उथल पुथल प्रतिबिम्बित होता था. मार्क्वेज वि□ायों की बाधाओं में सीमित नहीं है यह स्प□ट हो गया था.डo. सत्यदीप छेत्री, रसायन विज्ञान विभाग, सिक्किम सरकारी महाविद्यालय ने यह साबित कर दिया हैं, अगर प्रमाण की जरूरत थी.

उन्होंने ९८११ की घटना के बाद अमेरिका के रा□ट्रपति को मार्क्वेज द्वारा लिखे गए पत्र को पढ़ने के साथ अपना भा□ण का प्रारम्भ किया. उन्होने यह भी उल्लेख किया कि कैसे मार्क्वेज के लेखनों ने सीमाओं और संस्कृतियों की बाधाओं को समाप्त कर दिया हैं. प्रो टी.बी. सुब. बा, कुलपति ने एकांत के बारे में कुछ □ाब्द कहा और दर्शकों को भी□ में एक मार्क्वेज का परिचय दिया.

समारोह के अतिथियों में से एक प्रो. गुलशन कटारिया. विभागाध्यक्ष जो मार्क्वेज की तरह दिखते हैं, जब अपने चश्मे उतारे तब बिलकुल चित्र के व्यक्ति की तरह दिख रहे थे. इसके बाद अतिथियों द्वार साझा किए गए कुछ बातें हैं. जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय से आए प्रो अनिसुर रहमान कविता के शिक्षक के रूप में मार्क्वेज को पढ़ने आनंद के बारे में बताया. प्रो. कटारिया ने उल्लेख किया हैं कि देश के ऐसे दूरदराज के एक कोने में छात्रों द्वारा आयोजित एक ऐसी घटना देख कर वे हैरान थे, जब भ. ारत भर के □ि□ा परिसरों में इस तरह से सोचा नहीं गया. अंग्रेजी विभाग में कार्यभार ग्रहण करनेवाले प्रो. गुलाम अहमद ने कहा कि केसे कल्पनाओं की सीमा नहीं है और उन्होने कमला दास के साथ एक साक्षात्कार को याद किया. उन्हा. ेने कहा कि कल्पना की कोई सीमा नहीं है और जब □ाब्दों में परिवर्तित होती है तब सृजनात्मकता का परिचय देती है. इस के बाद सदन में खुली चर्चा □ुरु हुई.

उपस्थित लोगों ने डा. एचबी छेत्री, कलिम्पोंग से मौज. ूदा विधायक का वक्तव्य सुना.उनकी बेटी ने भी मार्क्वेज पढ़ने के पने अनुभवों को साझा किया. इसके बाद अंग्रेजी विभाग के छात्रों द्वारा दो गीत प्रस्तुत किए गए. छात्रों की लय पर सभी ताल मिलाने लगे. कार्यक्रम का समापन

Editorial Board

Pooja Gupta(JMC)
Anne Mary Gurung(Political Science)
Jay Kumar(Law)
Ajaykumar N(English)
Vaidyanath Nishant(English)
Rajeev Rajak(Geology)

सिक्किम विश्वविद्यालय क्रॉनिकल

पृष्ठ 2

खंड 2 अंक 3 मई 2014 केवल निजी प्रसार हेतु

हमारे समय में मार्क्वेज : कुछ विचार

बुढे कर्नल अपनी पेंशन के लिए इंतजार कर रहे है. वे ज्वार और लहरों में तैरते है, तूफान और आंधी में जीवित हैं. कभी कभी मुझे आश्चर्य होता है कि क्या मुझे इस तरह प्रतीक्षा ही करनी होगी. मुझे जीने के लिए इंतजार करना होगा ?

यही है कि मार्क्वेज के लेखन ने मुझे क्या कर डाला है. यह मुझे गहरी सोच में डाल देता है और और आश्चर्यचकित करते हैं और मैं सोच में डूबा रहता हूँ. उनके ग्रंथों में लैटिन अमेरिका के भीत. री गांवों का वर्णन है. मैकांडो उनकी पसंदीदा गाँव प्रतीत होता है जहां उन्होने अपनी कहानियों और उपन्यासों सृजन किया है. मैकांडो पूरी तरह से बाहरी दुनिया से कटा हुआ है.इधर, लोग सामान्य जीवन जी रहे हैं जो अन्य लोगों को असामान्य सा लगता है. आमतौर पर, बड़ी बातें आसानी से लापरवाही के साथ प्रस्तुत किए जा रहे हैं.

लेखन की यह विधि लगता हैं उन्हें अपनी दादी से मिली है. विज्ञान इस दुनिया के लिए नया है और अक्सर यात्रा जिप्सी द्वारा □ुरू की है. एकांत के एक सौ व□ों में, जिप्सी से बर्फ का प्रदर्शन ग्रामीणों द्वारा आश्चर्य के साथ मनाया जाता है. मार्क्वेज जादू यथार्थवाद के साथ जुड़ा हुआ है. असली तत्वों के साथ वास्तविक छबि का उदघाटन की क्षमता बहुत अधिक लेखकों में नहीं हैं. उनके उपन्यासों और कहानियों में गांवों को पूरी तरह से बाहरी दुनिया से दूर रखे हैं. उनके नोबल स्वीकृति भा□ाण को प□ने के बाद मुझे यह एहसास हुआ कि लैटिन अमेरिका का एकांत सिर्फ एक गाँव नहीं था, बल्कि पूरे लैटिन अमेरिका था. उनके ग्रंथ हमें लैटिन अमेरिका की नदियों और वनस्पति के बीच में ले जाते हैं.

हम लोहे की छतों के साथ कीचड़ घरा. में रहते हैं. हमें संस्कृति के बारे में पता चलता हैं और कई मायनों में हम अपनी संस्कृ ति के साथ समानता महसूस कर सकते हैं. उनकी कृतियों में भ एक भग्न जहाज के ना. विक की कहानी□ में हम एक पत्रकार के रूप में उनकी कुशलता का साक्षात्कार कर सकते हैं. पूरी कहानी रिपोर्ट लेखन प्रारूप में लिखा है.

यूरोप भर में एक विदेशी संवाददाता के रूप में उनकी यात्रा ने उनके लेखन के विकास में मदद की हे. उनके उपन्यासों में लैटिन अमेरिका के रा. जनीतिक उथलपुथल के बहुत से उदाहरण □ामिल हैं. महाद्वीप की निरंतर राजनीतिक अशांति इसमें परिलक्षित होता है. अपनी कल्पना के माध्यम से मार्क्वेज ने अपने दादा जोस आर्केडिओ बूएंडीया और उनकी दादी को जीवंत रूप दिया हैं. और मार्क्वेज उनके लेखन के माध्यम से सदा हमारे बीच रहेंगे जिसे हमने प□ा, हम प□ रहे हैं और हम प□ेंगे.

सिक्किम विश्वविद्यालय क्रॉनिकल

पृष्ठ 3

खंड 2 अंक 3 | मई 2014 | केवल निजी प्रसार हेतु

संपादक की कलम से

विश्वविद्यालय के शिक्षकों के लिए अप्रैल 2014 एक व्यस्त महीना रहा . शिक्षण के अलावा इन माह के दौरान राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (एनएएसी) के लिए स्व-अध्ययन रिपोर्ट की प्रस्तुति ने हमें व्यस्त रखा. साथ ही साथ विभिन्न विभागों में शिक्षण पदों के लिए चयनित लोगों के लिए नियुक्ति प्रस्ताव पत्र भेजा जा रहा है और विश्वविद्यालय में नए शिक्षकों के आना शुरु हो गया है. से संबद्ध कॉलेजों में दी गई अंडर ग्रेजुएट कोर्स और विभागों (एकीकृत पाठ्यक्रम का अध्ययन) के लिए पाठ्यक्रम की समीक्षा और संशोधन की प्रक्रिया पूरी की जा चुकी है और विभिन्न स्कूल बोर्डों की मंजूरी और उसके पश्चात शैक्षणिक परिषद के अनुमोदन की प्रतीक्षा में हैं.
विश्वविद्यालय द्वारा 16 - 29 अप्रैल 2014 तक आईसीएसएसआर प्रायोजित दो सप्ताह के क्षमता निर्माण कार्यशाला का आयोजन किया गया. डॉ. मनीष, सह प्राध्यापक और विभागाध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग और डॉ. इंदिरा के., सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग ने कार्यक्रम का संयोजन किया जिसमें विश्वविद्यालय के कुछ प्रतिभागी सहित देश भर में 30 से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया.
25 अप्रैल, शुक्रवार को अंग्रेजी विभाग के छात्रों द्वारा गेब्रियल गार्सिया मार्क्वे□ पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जो इस महीने का एक आकर्षण रहा. यह भी हुआ कि सिक्किम विश्वविद्यालय के बाहर से तीन प्रख्यात शिक्षक अंग्रेजी विभाग के पाठ्यक्रम की समीक्षा के लिए समिति के अंश के रूप में उपस्थित थे और संगोष्ठी में उनकी उपस्थिति और उनके भागीदारी समारोह को गरिमामयी बना दिया. छात्रों ने विशेष रूप से यह महसूस कराया कि वे मार्क्वेज की मौत का शोक मना रहे थे बल्कि उस महान लेखक और उनके कार्यों का उत्सव मना रहे थे. इस घटना की रिपोर्ट के अलावा हम इस अंक में लेखक और उनके कार्यों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी प्रकाशित कर रहे हैं. साथ ही हम इस अंक में एनी मेरी गुरुङ की कुछ चित्र भी शामिल कर रहे हैं.

डॉ. वी. कृष्ण अनंत (संपादकीय बोर्ड की तरफ से)

आमंत्रण पर व्याख्यान प्रदान

डॉ. वी. कृ□ण अनंत, सह प्रोफेसर, इतिहास विभाग 16 अप्रैल और 27 अप्रैल, 2014 तक सिक्किम विश्वविद्यालय में युवा संकायों के लिए आयोजित आईसीएसएसआर प्रायोजित क्षमता निर्माण कार्यशाला में 1. □ाोध का अर्थ और पक्ष, □ाोध की समस्या और साहित्य की समीक्षा और 2. मीडिया के लिए लेखन □ा□ाैक पर दो व्याख्यान दिये.

उपलब्धियां

डॉ. धर्मेंद्र प्रताप, सहायक प्राध्यापक, उद्यानिकी विभाग को अनुप्रयुक्त जैव प्रौद्योगिकी सोसाइटी (ए□एसएबी) के अध्येता के रूप में चयन किया गया हैं. ए□एसएबी पादप वायरस के नियंत्रण में डॉ. प्रताप के कार्यों को स्वीकृति देता है. वे बैंगन के अज्ञात बेगोमोवाइरस सहित कई पादप वाइरस के लक्षणों के वर्णन करने में अग्रणी हैं. उन्हा ेंने वाइरस प्रतिरोधी ट्रांसजेनिक टमाटर पौधों और बैंगन भी विकसित किया है. उनका □ाोध कार्य पादप जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बहुत उपयोगी है. एप्लाइड जैव प्रौद्योगिकी सोसायटी (सब) हर साल पांच व्यक्तियों को अध्येता पुरस्कार चयन करता है जो पुरस्कार प्राप्त कर्ताओं के पूरे जीवन के लिए वैध रहेगा.

प्रकाशन

डॉ. धृति रॉय, सहायक प्राध्यापक, चीनी भाषा विभाग
''पांचवीं शताब्दी सामान्य युग : पुनर्भिमुखी चीनी बौद्ध मठ परंपरा, भारत और चीन के बौद्ध मठ संबंध का पुनर्परिभाषिकरण : एक गहन अध्ययन''12 अप्रैल 2014 को आईसीसी, न्यू स्कूल, कार्य पत्र सिरी□ पदकपंबीपदंपदेजपजनजमणवतहद्धूच.बवदजमदजे६ नचसवंके६2014६04६छमॅ.ल्व्ट्ञ.म्क्प्ज्म्क.च।चम्त.

डॉ. वी. कृष्ण अनंत, सह प्राध्यापक, इतिहास विभाग
□ ड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम - ग्स्प्ग्र सं 14, 5 अप्रैल 2014 पृष्ठ 13-15
□ तमिलनाडू में मतदान दृश्य पर एक विश्लेषण, इकनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम - ग्स्प्ग्र सं 17, 26 अप्रैल, 2014, पृष्ठ 14-15

सिक्किम विश्वविद्यालय क्रॉनिकल

पृष्ठ 4

खंड 2 अंक 3 | मई 2014 | केवल निजी प्रसार हेतु

Cartoon Corner: